दिनकर राष्ट्रकवि क्यों?

① राष्ट्रकवि औपचारिक उपाधि या पदवी नहीं है बल्कि समाज द्वारा दिया जाने वाला सम्मान है --- (मैथिली जी में देखें)

② कसौटियाँ:

(i) राष्ट्रीय चेतना होनी चाहिए (दिनकर पराधीनता के दौर के कवि थे, राष्ट्रीय आंदोलन में जनता का आह्वान करते हुए कई कविताएँ लिखी)

- सदियों की ठंडी बुझी राख सुगबुगा उठी
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है
दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

(ii) राष्ट्र के सभी वर्गों को साथ लेकर चलने की क्षमता –

(क) गरीबों, वंचितों, स्त्रियों सभी के प्रति दिनकर के मन में समानता और समावेशन का भाव हो
- (जाति जाति रटते जिनकी पूँजी केवल पाखण्ड--)

(ख) गरीबों और वंचितों के पक्ष में
- (जब तक मनुज²--)
- (नहीं किसी को अधिक --)

(ग) स्त्रियों को सामान्य व्यक्ति का दर्जा देते हैं, देवी या दासी का नहीं

(iii) सहज भाषा + वक्तृत्व कला जो सीधे पाठक तक पहुँचती है और उसे प्रभावित करती है।
- (सावधान मनुष्य --)